International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
February- 2015, Volume-2, Issue-1
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

जे0 कृष्णामूर्ति के शिक्षा दर्शन की आधुनिक भारतीय शिक्षा में उपादेयता

डॉ0 (श्रीमती) लवलता सिन्धु
एम0एस0सी0, एम0ए0, एम0एड0, पीएच0डी0
एसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग)
मेरठ कालिज, मेरठ।

सारांश

जे0 कृष्णामूर्ति ऐसे ही अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्न महामानव थे, जिनका समग्र जीवन सत्य के लिए, आत्मबोध के लिए, मुक्ति के लिए, मानव सृजन और कल्याण के लिए समर्पित था। उनकी समग्र जीवन दृष्टि, उनका परिदर्शन और सम्यक शिक्षा भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रासांगिक, प्रायोगिक, महत्वपूर्ण, सार्थक और उपादेय है। जिनके सम्बन्ध में यह अध्ययन प्रस्तुत है। इस अध्ययन से पूर्व जे0 कृष्णामूर्ति का जीवन, व्यक्तित्व, उनकी पृष्ठभूमि, उनके सृजनात्मक व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय प्राप्त करना आवश्यक है।

प्रस्तावना

भारत और विश्व में मानव जीवन की मौलिक और भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना मात्र सरकारों और समाजों का उत्तरदायित्व रह गया है। किन्तु मनुष्य की प्रज्ञा, अन्तर्दृष्टि और आत्मबोध जाग्रत करना व्यक्तिगत ही नहीं बल्कि प्रत्येक का सामाजिक उत्तरदायित्व भी है। वर्तमान शिक्षा इस उत्तरदायित्व से विमुख हो गई है इसीलिए शिक्षा का अवमूल्यन हुआ है। सत्य की खोज के अभाव में मानवीय गरिमा का मानव सभ्यता और संस्कृति का पतन हुआ है। ऐसी विषम परिस्थितियों में व्यक्ति की मुक्त प्रतिभा, अन्तदृष्टि और आत्मबोध से सत्य और वास्तविकता के धरातल पर प्रत्येक समस्या का सामना और समाधान किया जा सकता है। ऐसे व्यक्ति और ऐसे समाज का निर्माण सम्यक शिक्षा और सम्यक दर्शन से ही सम्भव है। भारत में ऐसे अनेक व्यक्ति, दार्शनिक और सत्यान्वेषक हुए है जिनमें ऐसी प्रतिभा और अन्तदृष्टि थी, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं वरन् समग्र जीवन में आन्तरिक समृद्धि से मानव कल्याण किया है। जो भौतिक सत्ताएँ भी नहीं कर सकी है।

उद्देश्य

1- जे0 कृष्णामूर्ति की शिक्षाओं में दार्शनिक आधार की खोज तथा दर्शन के सन्दर्भ में उनकी दार्शनिक परिदृष्टि को प्रस्तुत करना।

2- जे0 कृष्णामूर्ति की शिक्षाओं में मनोवैज्ञानिक आधार की खोज तथा बाल एवं शिक्षा मनोविज्ञान के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक परिदृष्टि को प्रस्तुत करना।

3- आधुनिक काल तक विकसित समस्त शिक्षा दर्शनों के सन्दर्भ में जे0 कृष्णामूर्ति का दृष्टिकोण प्रस्तुत करना।

4- जे0 कृष्णामूर्ति की शिक्षाओं में समाजशास्त्रीय आधार की खोज तथा उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनैतिक परिदृष्टि को प्रस्तुत करना।

5- जे0 कृष्णामूर्ति की शिक्षाओं में उन सार्वभौतिक तत्वों की खोज करना, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध, मानवता और विश्वशान्ति की स्थापना सम्भव हो।

6- भारत में विकसित आधुनिक शिक्षातन्त्र का समीक्षात्मक अध्ययन करना तथा जे0 कृष्णामूर्ति द्वारा शिक्षा की पुनसंरचना में योगदान स्पष्ट करना।

7- भारतीय दर्शन के परिप्रेक्ष्य में दर्शन के सभी पक्षों पर जे0 कृष्णामूर्ति का परिदर्शन प्रस्तुत करना।

8- जीवन में जे0 कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन के महत्व को प्रकाशित करते हुए जे0 कृष्णामूर्ति का सम्यक शिक्षा दर्शन प्रस्तुत करना और विश्वशान्ति की स्थापना में सम्यक शिक्षा की उपादेयता स्पष्ट करना।

9- शिक्षा दर्शन के समक्ष उत्तर आधुनिकतावाद की चुनौतियों के समाधान की दिशा में जे0 कृष्णामूर्ति की शिक्षाओं की सार्थकता, प्रासांगिकता और उपादेयता स्पष्ट करना।

अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन विषय वस्तु के परिसीमन की दृष्टि से शोधकर्ता ने भारतीय दर्शन, भारतीय एवं पाश्चात्य शिक्षा दर्शन, शिक्षा मनोविज्ञान तथा भारतीय धर्म, समाज, संस्कृति, राजनैतिक तन्त्र एवं शिक्षा तन्त्र के सन्दर्भ में जे0 कृष्णामूर्ति के विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन किया है।

अध्ययन की विधि

किसी भी अनुसंधान में अनुसंधान प्रक्रिया और अनुसंधान विधि का महत्वपूर्ण स्थान है। एक अनुसंधान समस्या के निष्कर्ष प्राप्ति तक की प्रक्रिया में उचित अनुसंधान विधि का चयन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किसी अनुसंधान और अध्ययन की सफलता का श्रेय अनुसंधान और अध्ययन की विधि को जाता है।

जब किसी अनुसंधान में विधि को अधिक महत्व दिया जाता है और ऐसी समस्या का चयन किया जाता है जिसका अध्ययन केवल वैज्ञानिक विधि द्वारा ही सम्भव है तो उस स्थिति में अनुसंधान का स्वरूप विधि अनुस्थापित (Method oriented) होता है। किन्तु जब किसी अध्ययन में विधि की अपेक्षा उस समस्या पर अधिक बल दिया जाता है तो उस स्थिति में अनुसंधान का स्वरूप समस्या अनुस्थापित (Problem Oriented) होता है और विधि को कम महत्व दिया जाता है तब समस्या के अध्ययन हेतु एक ऐसी प्रक्रिया अपनायी जाती है कि जिसके आधार पर उस समस्या का अध्ययन उपयुक्त रहता है। इस प्रकार अध्ययन की उस प्रक्रिया को वैज्ञानिकता के कठोर मापदण्ड और विधि (Method) न कहकर उसे विधि तन्त्र (Mehodology) कहा जाता है। विधितन्त्र के अन्तर्गत किसी एक विधि को महत्व न देकर उन सब अन्वेषण पद्धतियों का समावेश किया जाता है जिनकी सहायता से एक समस्या का अध्ययन उपयुक्त रहता है। शैक्षिक अनुसंधान में विधि अनुस्थापित अनुसंधान का क्षेत्र कम है किन्तु इसमें समस्या अनुस्थापित अनुसंधान का क्षेत्र अधिक है। शैक्षिक समस्याओं की प्रकृति के आधार पर सामान्यतः तीन प्रकार की शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ हैं– ऐतिहासिक (Historical), विवरणात्मक (Descriptive) या नियामक (Normative) या सर्वेक्षण (Survey) और प्रायोगिक (Experimental)।

अध्ययन के निष्कर्ष एवं अनुप्रयोग

अध्ययन का प्रथम उद्देश्य–

जे0 कृष्णामूर्ति की शिक्षाओं में दार्शनिक आधार की खोज तथा दर्शन के सन्दर्भ में उनकी दार्शनिक परिदृष्टि को प्रस्तुत करना है।

जे0 कृष्णामूर्ति के अनुसार दर्शन का अर्थ दैनिक जीवन में सत्य से प्रेम और सत्य की खोज करना है। वे दर्शन का सैद्धान्तिक अर्थ न करते हुए दर्शन को जीवन जीने की कला कहते हैं। उन्होंने दर्शनशास्त्र की शाखाओं में तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा और मूल्य मीमांसा के अन्तर्गत सत्य, आत्मा, ईश्वर, ज्ञान, आत्मज्ञान, पुर्नजन्म, मृत्यु, जीव–जगत, कार्य–कारण सम्बन्ध, मुक्ति, ध्यान, धर्म, नैतिकता, कर्म, प्रेम और सौन्दर्य पर विस्तृत परिचर्चा की है। उन्होंने सत्य, ईश्वर, आत्मज्ञान और ध्यान के लिए किसी पुस्तकीय अध्ययन या विधि को अनावश्यक और बाधक बताया है। वे कहते है कि बाह्य जगत का ज्ञान होने के बावजूद भी जो स्वयं को नहीं जानता वह अज्ञानी है। इसलिये प्रत्येक को सत्य की खोज करना चाहिये। जिससे यह पता चले कि जिन्होंने सत्य के सम्बन्ध में

जो कुछ कहा है वह सही है या नहीं। वे इसके अतिरिक्त सत्य का अन्य कोई प्रमाण नहीं मानते हैं।

जे0 कृष्णामूर्ति स्वयं को कोई दार्शनिक, विद्वान, गुरू, धर्मगुरू, ज्ञानी, मुक्तिदाता या पथप्रदर्शक आदि मानने का दावा कदापि नहीं करते। वे स्वयं को सत्यान्वेषी मानते है और मानव के कल्याणार्थ विश्व में समस्त मानव जाति को सत्यान्वेषण की प्रेरणा प्रदान करते है। इसलिए उन्हें सत्य प्रणेता की संज्ञा दी जा सकती है। जे0 कृष्णामूर्ति ने ज्ञान के चार प्रकार बताए हैं–पुस्तकीय ज्ञान, सामूहिक ज्ञान, व्यक्तिगत ज्ञान और आत्मज्ञान। ये सभी प्रकार के ज्ञान जीवन में आवश्यक और उपयोगी है। किन्तु आत्मज्ञान या आत्मबोध के अभाव में जीवन में अशान्ति और दुख रहेगा, इसलिए उन्होंने सत्य की खोज और आत्मबोध या आत्मज्ञान और प्रज्ञा जागरण को शिक्षा का उद्देश्य कहा है। अतः जे0 कृष्णामूर्ति की दृष्टि में शिक्षा का वास्तविक अर्थ स्वयं को जानना, आत्मबोध और प्रज्ञा का जागरण तथा सीखने की कला है।

जे0 कृष्णामूर्ति ने एक दार्शनिक की भाँति शिक्षा दर्शन के प्रत्येक पक्ष पर दार्शनिक परिदृष्टि को प्रस्तुत किया है। जे0 कृष्णामूर्ति ने आधुनिक विश्व में सम्यक शिक्षा के उन उद्देश्यों की ओर संकेत किया है, जो आधुनिक भारतीय परिस्थिति में भी सार्थक, उपादेय और ग्राह्य है। अतः प्रस्तुत अध्ययन के प्रथम उद्देश्य की प्राप्ति हुई है।

अध्यन का द्वितीय उद्देश्य–

'जे0 कृष्णामूर्ति की शिक्षाओं में मनोवैज्ञानिक आधार की खोज तथा बाल एवं शिक्षा मनोविज्ञान के सन्दर्भ में उनकी मनोवैज्ञानिक परिदृष्टि को प्रस्तुत करना' है।

जे0 कृष्णामूर्ति स्वयं कहते हैं कि यद्यपि उन्होंने एक भी दार्शनिक, धार्मिक और मनोवैज्ञानिक पुस्तक नहीं पढ़ी। फिर भी दर्शनशास्त्र से पृथक, पाश्चात्य देशों में अल्पावधि (सन् 1898 से 1912) में विकसित आधुनिक मनोविज्ञान की गहन समझ जे0 कृष्णामूर्ति में अद्भुत है। उन्होंने 'चयन विहीन ध्यान' अवलोकन और प्रज्ञा से न केवल अपने मन बल्कि समस्त मानव जाति के समग्र मन में प्रवेश कर दर्शन किया है। इसीलिए उन्होंने मानव व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए सम्यक शिक्षा के माध्यम से अपना मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण और मनोदर्शन प्रस्तुत किया है।

जे0 कृष्णामूर्ति ने मानव व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए बालक के वंशानुक्रम और वातावरण के सन्दर्भ में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, संवेगात्मक और सामाजिक विकास के सभी पक्षों पर व्यापक विचार प्रस्तुत किए है। जिसमें वातावरण को अधिक महत्व दिया है। मानव की चौदह मूल प्रवृत्तियों और छः सामान्य प्रवृत्तियों पर उन्होंने जो मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है विशेषकर किशोरावस्था पर, उससे उनकी मनोवैज्ञानिक परिदृष्टि अवश्य प्रकट होती है। उन्होंने कोई मनोवैज्ञानिक सम्प्रदाय निर्मित नहीं किया किन्तु फ्रायड के मनोविश्लेषण और स्वप्न विश्लेष्ण का खण्डन अवश्य किया है। जे0 कृष्णामूर्ति ने अखण्ड मन के अध्ययन के लिए आत्मनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ दोनों प्रकार के सजब अवलोकन और निरीक्षण को न केवल शिक्षा में वरन् समग्र जीवन में सार्थक कहा है। क्योंकि मन का अस्तित्व अदृश्य किन्तु बहुत सशक्त है।

जे0 कृष्णामूर्ति ने बिना किसी प्रतियोगिता और महत्वाकांक्षा के न केवल विद्यालय में बल्कि आजीवन सीखने पर बल दिया हे। वे प्रत्येक बालक को अद्वितीय और उसका मस्तिष्क कोरी–स्लेट मानते हैं। उन्होंने सीखने या अभिगम में अभिप्रेरणा के सन्दर्भ में पुरस्कार और दण्ड, महत्वाकांक्षा और प्रतियोगिता को अवान्छनीय माना है। किन्तु जिज्ञासा और सृजनशीलता को अति महत्वपूर्ण अभिप्रेरक कहा है। जिसे आजीवन जाग्रत रखते हुए सतत् सीखा जा सके। कृष्णामूर्ति सतत् अधिगत के लिए अवधान के स्थान पर 'चयन विहीन ध्यान' और एकाग्रता के स्थान पर सजगता, रूचि, प्रेम तथा संवेदना के स्थान पर संवेदनशीलता को महत्वपूर्ण मानते है। मानसिक विकास के लिए वे मात्र बौद्धिक विकास को अपूर्ण कहते है। क्योंकि मात्र बुद्धि के विकास से विनाशकारी कार्य हो सकते है। वे प्रज्ञा को बुद्धि, विवेक और ज्ञान से अधिक व्यापक मानते हैं, जिसमें दोनों सम्मिलित हैं। उन्होंने बिना किसी प्रतियोगिता और महत्वाकांक्षा के सृजनशीलता को शिक्षा और जीवन में आविष्कार और तकनीक से अधिक महत्व दिया है, जिससे मानव सृजनशील हो सके।

मनोविज्ञान की उत्पत्ति दर्शनशास्त्र से हुई है। इसलिए अनेक दार्शनिक मनोवैज्ञानिक भी हुए है और अनेक मनोवैज्ञानिक दार्शनिक दृष्टिकोण भी रखते है। दर्शनशास्त्र के बिना मनोविज्ञान अपंग और दिग्भ्रमित हो गया है और ऐसा ही पाश्चात्य देशों में विकसित मनोविज्ञान के साथ हुआ है। जे0 कृष्णामूर्ति ने बिना कोई दार्शनिक या मनोवैज्ञानिक पद्धति और विधि निर्मित किए पुनः दर्शन और मनोविज्ञान में समन्वय स्थापित किया है।

अतः जे0 कृष्णामूर्ति को दार्शनिक होने के साथ एक मनोवैज्ञानिक होने का भी श्रेय है। शिक्षा दर्शन और शिक्षा मनोविज्ञान में जे0 कृष्णामूर्ति के मनोदर्शन का योगदान समस्त मानव समाज के लिए अविस्मरणीय, सार्थक और उपयोगी है। उनकी शिक्षाओं में बाल मनोविज्ञान और शिक्षा मनोविज्ञान की सभी संकल्पनाए है। जे0 कृष्णामूर्ति के विचारों और शिक्षाओं का मनोवैज्ञानिक आधार भी है। अतः इस अध्ययन में प्रस्तुत जे0 कृष्णामूर्ति की शिक्षाओं में उनकी मनोवैज्ञानिक परिदृष्टि और मनोदर्शन आधुनिक भारतीय शिक्षा में उपादेय और प्रासांगिक है। इस प्रकार इस अध्ययन का दूसरा उद्देश्य पूर्ण होता है।

अध्ययन का तृतीय उद्देश्य–

'आधुनिक काल तक विकसित समस्त शिक्षा दर्शनों के सन्दर्भ में जे0 कृष्णामूर्ति का दृष्टिकोण प्रस्तुत करना' है।

शिक्षा दर्शन की प्रमुख विचारधाराएँ–

आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोजनवाद, पुर्नसंरचनावाद, अस्तित्ववाद, तार्किक प्रत्यक्षवाद और आधुनिक मानवतावाद है। शिक्षा दर्शन की इन विचाराधाराओं ने देशकाल और परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा तन्त्र को प्रभावित किया है। शिक्षा दर्शन की इन विचारधाराओं के परिप्रेक्ष्य में जे0 कृष्णामूर्ति की शैक्षिक परिदृष्टि सम्यक शिक्षा के रूप में अभिव्यक्त हुई है। जिसमें शिक्षा के सभी पक्षों पर उन्होंने व्यापक विचार विमर्श किया है।

जे0 कृष्णामूर्ति आदर्शवादी नहीं है किन्तु उन्होंने शिक्षा के उद्देश्यों–सत्य की खोज, शाश्वत मूल्यों की खोज, आत्मबोध और प्रज्ञा जागरण आदि को पवित्र साध्य मानकर शिक्षा के पवित्र साधनों द्वारा प्राप्तव्य कहा है। इसलिए उन्हें सत्य प्रणेता कहना सार्थक है।

जे0 कृष्णामूर्ति यथार्थवादी नहीं है। क्योंकि यथार्थवाद इन्द्रियानुभूत प्रत्यक्ष जगत को ही सत्य मानता है। किन्तु जे0 कृष्णामूर्ति प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सत्य दोनों को खोजकर ही स्वीकार करते है। वे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जगत दोनों को अविभाज्य और एक ही मानते है क्योंकि मात्र अभिव्यक्ति में ही भिन्नता है। जे0 कृष्णामूर्ति की परिदृष्टि समग्र है अतः उन्हें समग्रतावादी कहा जा सकता है।

जे0 कृष्णामूर्ति का शिक्षा दर्शन बालकेन्द्रित है। वे बालक की स्वतन्त्रता को अधिक महत्व देते हुए अनुशासन को अनावश्यक कहते हैं। इस प्रकार वे स्वतन्त्रता या मुक्ति को आजीवन समग्र व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण मानते है। इसलिए उन्हें मुक्तिवादी की संज्ञा दी जा सकती है। जे0 कृष्णामूर्ति प्रकृतिवादियों के प्राकृतिक एकता सिद्धान्त को प्राकृतिक सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं। वे प्राकृतिक सत्य से भी परे अज्ञात और शाश्वत सत्य की खोज को शिक्षा और जीवन के प्रोत्साहित करते हैं। अतः वे प्रकृतिवादी और एकत्ववादी समग्र दृष्टि रखते है। इस अर्थ में वे समग्रतावादी है।

जे0 कृष्णामूर्ति प्रयोजनवादियों की भांति नवीन सत्य, नवीन मूल्य, और नवीन चुनौतियों के लिए शिक्षा का आयोजन करते हैं किन्तु प्रयोजनवाद मात्र उपोगितावादी और भौतिकवादी दर्शन है जो मानव से अधिक व्यवस्था, समाज और भौतिक जगत को ही महत्वपूर्ण मानता है। जे0 कृष्णामूर्ति की दृष्टि में किसी दर्शन, धर्म, प्रणाली, सिद्धान्त या व्यवस्था से अधिक मनुष्य महत्वपूर्ण है। जे0 कृष्णामूर्ति मानवतावादी प्रयोजनवाद के समकक्ष होते हुए भौतिक और आध्यात्मिक जगत में समन्वय स्थापित करते हैं इसलिए उन्हें समन्वयवादी विचारक माना जा सकता है।

पुर्नसंरचनावाद, प्रयोजनवाद की समकालीन विचाराधारा है। यह लोकतन्त्र, विश्व नागरिकता और विश्व सभ्यता स्थापित करने के लिए सुधारवादी आन्दोलन है। जे0 कृष्णामूर्ति की शिक्षाएं एकदेशीय न होकर सार्वभौमिक हैं। वे विश्व नागरिकता, विश्व सरकार, विश्व संस्कृति और सभ्यता की स्थापना आवश्यक मानते हैं, जो विश्व शान्ति की आधारशिला है। इस प्रकार जे0 कृष्णामूर्ति अन्राराष्ट्रीयता और अन्तरसांस्कृतिक भावना को शिक्षा द्वारा स्थापित करते हैं। अतः जे0 कृष्णामूर्ति अन्राराष्ट्रीयतावादी विचारको की श्रेणी में है।

References-

1. A Survey of Research in Education, CASE, M.S. University, Baroda, 1974.

2. Bulletin-1996/1, Krishnamurti Foundation India, Chennai.

3. Bulletin-1996/2, Krishnamurti Foundation India, Chennai.

4. Britannica Ready Reference Encyclopaedia, Encyclopaedia Britanica (India) Pvt. Ltd. New Delhi, 2006.

5. Encyclopaedia of Philsophy and Education, Vol I & II Cosmos Publication, New Delhi, 2001.

6. Fourth Survey of Research in Education, NCERT, New Delhi, 1991.

7. Fifth Survey of Research in Education, NCERT, New Delhi, 2000.

8. Journal of Krishnamurti Schools, K.F.I. Chennai.

9. Osho Times International, vol 8, issue 6, march 1995. Tao Publishing, Pune.

10. Report of J. Krishnamurti Birth Century Educational Conference, K.F.I. Chennai 1995.

11. Relevance of Philosophy in contemporary social and scientific world Situation, National Seminar Report, March 2000, Meerut College Meerut.

12. Second Survey of Research in Education, SERD, Baroda, 1979.

13. Sixth Survey of Research in Education, NCERT, New Delhi, 2006.

14. Third Survey of Research in Education, NCERT, New Delhi, 1986.

15. The Link, issue No 22/2002, Krishnamurti Link International, Neitherland.

16. The Link, issue No 23/2003, Krishnamurti Link International, Neitherland.

17. The Link, issue No 24/2002, Krishnamurti Link International, Neitherland.

18. The Theosophist, May 1995, The Theosophical publishing house, Chennai.